॥ ओ३म् ॥

आर्य-ध्वज

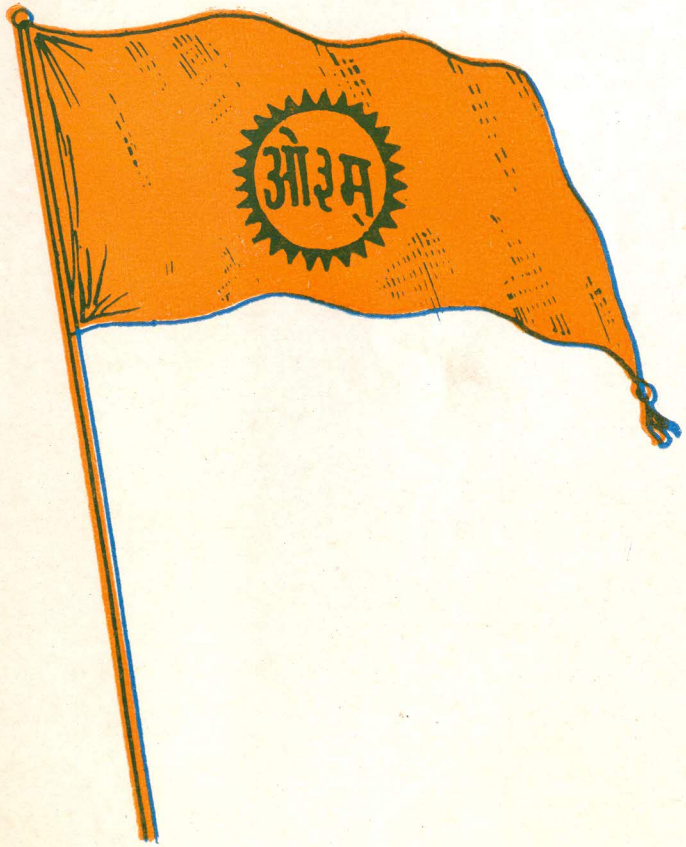

प्रकाशक :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

नई दिल्ली-२

॥ ओ३म् ॥

आर्य-जाति की धर्म-पताका

आर्य-ध्वज

आरोहण–अवतरण–पद्धति,
जयघोष तथा ध्वज–गीत सहित

आर्य-संवत्सर 1972949093

प्रकाशक :
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली-२

दयानन्दाब्द 169
विक्रम संवत् 2050

प्रकाशक :
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-110002
दूरभाष-3274771

द्वितीय संस्करण—1993

मूल्य—दो रुपये

मुद्रक :
जनशक्ति मुद्रणयन्त्रालय
के 17, नवीन शाहदरा,
दिल्ली-110032

प्रस्तावना

सन् 1933 तक आर्य-ध्वज का कोई स्वरूप निश्चित नहीं था। आर्य समाज मन्दिरों पर भिन्न-भिन्न रंग और आकार प्रकार के झण्डे लगे होते थे। बीच में 'ओ३म्' अवश्य होता था, परन्तु वह भी भिन्न-भिन्न रूपों में ध्वजगीत लोगों ने अपने-अपने बना रक्खे थे। सन् 1933 में श्रीमद्यानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर शताब्दी समिति की ओर से इस निमित्त एक समिति बनाई गई। श्री महात्मानारायण स्वामी जी इस समिति के अध्यक्ष बनाये गए और पं० शिवदयालु जी मन्त्री। ध्वज-गीत बनाने के लिए कवियों से प्रार्थना की गई। मैनपुरी के प्रसिद्ध विद्वान नेता श्री श्यामसुन्दरलाल जी की सुपुत्रियों श्रीमती सुशीलकुमारी तथा श्रीमती कुसुमप्यारी द्वारा रचित 'जयति ओम् ध्वज व्योम विहारी' इत्यादि गीत स्वीकारं किया गया। आर्यध्वज के स्वरूप आरोहण—अवतरण—पद्धति, जयघोष आदि के सम्बन्ध में उक्त समिति द्वारा किए गए निश्चय यहां प्रकाशित किए जा रहे हैं। इनमें संशोधन-परिवर्धन करने का अधिकार किसी व्यक्ति या समाज को नहीं है। एकरूपता वनाए रखने के लिए ज्यों का त्यों पालन करना सबके लिए अनिवार्य है। इस विषय में विशेषरूप से निम्न बातों पर ध्यान रखना आवश्यक है—

1—जिस प्रकार राष्ट्रीय गीत अनेक हो सकते है पर 'राष्ट्र गान' एक ही होता है, उसी प्रकार वैदिक धर्म सम्बन्धी अनेक गीत

हो सकते हैं, पर आय-ध्वज गीत एक ही है—'जयति ओ३म् ध्वज व्योम विहारी। ध्वजारोहण की व्यवस्था प्रायः आर्यवीर दल के अधीन होती है, इसलिए वे आर्य वीर दल का अथवा अन्य कोई गीत चालू कर देते हैं। यह कदापि नहीं होना चाहिए।

2—ध्वज गीत बुलवाने वाले प्रशिक्षित होने चाहिए जो नियत शैली (तर्ज) में छोटे-छोटे टुकड़ों में गाकर उपस्थित लोगों से बुलवाएं। ध्वजारोहण के कार्यक्रम के बीच परस्पर किसी प्रकार की बात चीत नहीं करनी चाहिए।

3—ध्वज पर 'ओ३म्' इसी प्रकार लिखा होना चाहिए।

4—सर्वाधिक भूल जयघोष के विषय में होती है। सभा के आदेश है कि "ध्वजारोहण के अवसर पर तीन बार केवल 'वैदिक धर्म की जय' ही बोलनी चाहिए 'वैदिक धर्म की जय' में ही संसार के समस्त ऋषि मुनियों, साधु सन्तों, महात्माओं तथा महापुरुषों की जय सम्मिलित है। इसलिए इस अवसर पर किसी व्यक्ति का, चाहे वह कितना ही महान् तथा वन्दनीय क्यों न हो, जयघोष नहीं करना चाहिए।" हम वैदिक धर्म की जय के साथ ही स्वामी दयानन्द की जय, स्वामी श्रद्धानन्द की जय, भारत माता की जय, आर्यसमाज अमर रहे आदि नारे लगाने लगते हैं। यह सब अनुचित है, क्योंकि ऐसा करने से ओ३म् ध्वज की सार्वभौमता और सार्वकालिकता नष्ट होकर उसका सम्बन्ध व्यक्ति, समाज व देश विशेष के साथ जुड़ जाता है, जबकि हम घोषणा यह करते हैं कि 'ओ३म्' परमेश्वर का नाम होने से यह झंडा न किसी सम्प्रदाय विशेष का है और न किसी समाज या देश विशेष का है। इस विषय में मैं यहां दो विशिष्ट घटनाओं का उल्लेख करना उपयोगी समझता हूं। इससे बड़ी महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलेगी।

आर्य-ध्वज राष्ट्रीय ध्वज से ऊंचा

सन् 1959 की बात है। मैं उन दिनों आर्य कालेज पानीपत का प्रिंसिपल था। 26 जनवरी को गणतन्त्र दिवस आया। उस दिन परम्परानुसार कालेज में भी राष्ट्र ध्वज फहराया जाता है। उसकी व्यवस्था एन० सी० सी० के द्वारा की जाती है। कालिज के हाल पर सदा 'ओ३म्' ध्वज फहराता रहता है। तब भी लहरा रहा था। एन० सी० सी० आफिसर का कहना था कि राष्ट्र ध्वज से ऊंचा कोई ध्वज नहीं हो सकता। इसलिए राष्ट्रीय ध्वज फहराने से पहले 'ओ३म्' ध्वज उतारा जाना चाहिए। मैंने कहा कि यह बात साम्प्रदायिक या राजनैतिक झण्डों पर लागू होती है, ओ३म् के झण्डे पर नहीं, क्योंकि वह संसार के सब झण्डों से बड़ा है। किसी भी अवस्था में ओ३म् ध्वज नहीं उतारा जा सकता। वह जहां है, वहीं रहेगा। एन० सी० सी० आफिसर अपनी वर्दी उतार कर एक ओर खड़े हो गए। राष्ट्रीय ध्वज को यथास्थान आर्यसमाज के प्रधान के हाथों फहरा दिया गया।

उस वर्ष कालिज का दीक्षान्त भाषण देने के लिए पंजाब के गवर्नर श्री नरहरिविष्णु गाडगिल को आमंत्रित किया गया था और उन्होंने आना स्वीकार कर लिया था। जब मैं उन्हें स्मरण कराने और कार्यक्रम को अन्तिम रूप देने के विचार से चण्डीगढ़ जाकर उनसे मिला तो उन्होंने सहज भाव से कह दिया कि गणतन्त्र दिवस पर आपके कालिज में राष्ट्रीय ध्वज का अपमान हुआ है, इसलिए मैं आपके यहां दीक्षान्त भाषण देने नहीं आ सकता। उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि जब तक केन्द्रीय गृह मन्त्रालय से इसका निर्णय नहीं हो जाता तब तक मेरा आपके

यहां आना संभव नहीं। तब मुझे पता लगा कि पानीपत के कुछ कांग्रेसियों ने उस मामले को इतने विकृत रूप में प्रस्तुत किया था।

मुझे जानकारी के आधार पर विश्वास था कि ओ३म् का झण्डा सब झण्डों (जिनमें राष्ट्रीय झण्डा भी शामिल था) से ऊंचा फहरा सकता है। आर्य समाज के मान्य नेता श्री घनश्याम सिंह गुप्त उस संविधान परिषद् (Constituent Assembly) के महत्वपूर्ण सदस्यों में थे जिसने राष्ट्रीय ध्वज के सम्बन्ध में निश्चय किए थे। उनकी सहायता से मैंने उस समय की कार्यवाही की छानबीन कराई। पं० गोविन्दवल्लभ पन्त उन दिनों केन्द्रीय गृहमन्त्री थे। उन्होंने यह मामला निर्णय के लिए विधि मन्त्रालय (Law Ministry) को सौंप रक्खा था। अन्ततः विधि मन्त्रालय ने निर्णय कालिज के पक्ष में दिया कि ओ३म् ध्वज राष्ट्रीय झण्डे से ऊंचा फहरा सकता है। श्री गाडगिल यथासमय कालिज में आए।

ओ३म् ध्वज साम्प्रदायिक नहीं

इस प्रसंग में उच्चतम न्यायालय (Supreme Court) के भी एक निर्णय का उल्लेख करना उपयोगी होगा। हरियाणा में हुए लोक सभा चुनाव में एक बार आर्य समाज के नेता श्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती विजयी हुए। उनके विरुद्ध पराजित प्रत्याशी श्री प्रतापसिंह दौलता ने उनके निर्वाचन को इस आधार पर अवैध घोषित किए जाने की मांग की कि सिद्धान्ती जी ने चुनाव प्रचार में अपनी जीप पर ओ३म् लगाकर एक सम्प्रदाय विशेष की भावनाओं को उभारा है जो चुनाव सम्बन्धी आचार संहिता

के विरुद्ध है। श्रीगोपाल स्वरूप पाठक (कालान्तर में उपराष्ट्रपति) उनकी ओर से वकील थे। इस पर पहले पंजाब हाई कोर्ट ने और फिर सुप्रीम कोर्ट ने निर्णय दिया कि ओ३म् का ध्वज साम्प्रदायिक नहीं है।

गायत्री मन्त्र साम्प्रदायिक नहीं

इस प्रकरण में एक और घटना का उल्लेख करना भी महत्त्वपूर्ण है। तमिलनाडू की राजनैतिक पार्टी द्रविड़कड़गम ने मद्रास हाई कोर्ट में एक याचिका प्रस्तुत की कि सन् 1983 में सार्वजनिक क्षेत्र (Public Sector) की एक संस्था यूनाइटिड ऐश्योरेंस कम्पनी ने अपने दीवाली सम्बन्धी शुभकामना कार्ड में गायत्री मन्त्र और उसका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित करके साम्प्रदायिकतापूर्ण कार्य किया है। दावे के अनुसार उस कंपनी ने 25 हजार रुपये के सार्वजनिक धन का दुरुपयोग किया है। न्यायालय से प्रार्थना की गई कि सार्वजनिक क्षेत्र की इस कंपनी को आदेश दिया जाय कि वह इस प्रकार की साम्प्रदायिक भावना से अपने को दूर रखे। हाई कोर्ट ने 29 अगस्त 1992 को दिए गए अपने निर्णय में प्रस्तुत दावे को रद्द करते हुए कहा—

"यह मन्त्र ऋग्वेद से लिया गया है जो वैदिक ज्ञान की कुंजी है। समस्त वेद सदा से ही मानवता के प्रतीक रहे हैं जिनका सम्बन्ध किसी भी धर्म विशेष, जाति या सम्प्रदाय से नहीं है। न्यायाधीश ने दावेदार के इस दावे को मानने से इन्कार कर दिया कि गायत्री मन्त्र केवल ब्राह्मणों के लिए है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार का तर्क भ्रामक एवं मिथ्या है। किसी भी स्थान पर ऐसा नहीं लिखा है कि यह मन्त्र केवल ब्राह्मणों की बपौती है

या किसी धर्म, जाति या सम्प्रदाय विशेष से उसका सम्बन्ध है।"

मद्रास हाई कोर्ट ने अपने निर्णय में उसका 'शब्द ब्रह्म' के रूप में वर्णन करते हुए घोषणा की कि "गायत्री मन्त्र द्वारा शुभ कामना व्यक्त करना भारतीय संविधान की किसी धारा के विरुद्ध नहीं है।"—(टाइम्स आफ इण्डिया, बम्बई के 31 अगस्त 1992 के अंक के आधार पर)

आर्य ध्वज के गौरव को अक्षुण्ण रखने तथा एकरूपता बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि आर्य समाज के संगठन के प्रत्येक स्तर पर, प्रत्येक अवसर पर समस्त अधिकारी व कार्यकर्ता, ध्वजारोहण करने वाले आर्य नेता, उपदेशक और सभी आर्यजन इस पत्रिका में उल्लिखित निर्देशों का यथावत् पालन करें और करायें।

डी 14/16 माडल टाउन
दिल्ली

(स्वामी) विद्यानन्द सरस्वती
सम्पादक

॥ ओ३म् ॥

आर्य-जाति की धर्म-पताका

आर्य-ध्वज

ॐ उत्तिष्ठत संनह्यध्वमुदाराः केतुभिः सह।
सर्पा इतरजना रक्षांस्यमित्राननुधावत॥
अथर्ववेद का० 11। अ० 5। सू० 10। मं० 1॥

विश्व की महती आर्य-सभ्यता के पावनस्रोत वेद का संसार के समस्त मनुष्यों को आदेश है कि अज्ञान और प्रमाद की अंधेरी रात्रि से निकल कर, मिथ्याभिमान, घृणा और द्वेष की दुःख-जनक वृत्तियों को त्याग कर विश्व-बन्धुत्व और समता की सुन्दर शृंखला में आबद्ध हो जाओ, संकुचित साम्प्रदायिक भावनाओं का अन्त करो तथा प्राणीमात्र के कल्याण साधन की श्रेष्ठतम उदारभाव-तरंगों से आप्लावित होकर विश्वविजयिनी वैदिक-धर्मपताका को धारण करो और दुष्ट नृशंस अन्यायी अत्याचारियों से प्राणीमात्र की रक्षा करने रूप पावन युद्धक्षेत्र में निर्भयतापूर्वक ईश-विश्वास के आधार पर अवतीर्ण हो।

आर्यसमाज वेदों, विश्वास रखने वालों की युग 2 में ऋषि-मुनियों, साधु-संतों द्वारा लिखे गये उपनिषदों, दर्शनादि सूत्रों में आस्था रखने वाले संसार के समस्त मनुष्यों की एक प्रमुख तथा मान्य संस्था है। आर्यसमाज का धर्म निश्चय और निर्विवाद रूपेण सार्वभौमिक (Universal) तथा सार्वकालिक (Eternal) है। सत्य की पूजा (Truth Worship) विश्वभ्रातृत्व (world brotherhood) तथा समता (Equality) उसका मानव-जाति के प्रति प्रमुख सन्देश है।

आर्यसमाज केवल भारत देश में ही नहीं अपितु बाहर भी कितने ही देश विदेशों में संस्थापित है और उस शुभ घड़ी की उत्सुकतापूर्वक बाट जोह रहा है, जब कि संसार के कोने-कोने में भगवान् दयानन्द का यह पवित्र संघ सुसंगठित होगा।

आर्य-जाति अज्ञातकाल से नाना प्रकार के चिह्नों से चिह्नित ध्वजों को धारण करती आई है। इन सब ध्वजों में ओंकार का चिह्न तो प्रायः सर्वत्र ही पाया जाता है। आर्य-जाति के ध्वजों की भित्तिका (Surface) तो लगभग सर्वदा ही लाल, केसरी, वसंती वा गेरुआ वर्ण की रही है। अभिप्राय यह है कि लालिमा से आर्य-ध्वज सदा चमकते रहे हैं। भले ही युग-युग में ध्वज में कुछ कुछ परिवर्तन होता रहा हो किन्तु मौलिक परिवर्तन का कहीं पता नहीं। वर्तमान युग में भी आर्य-सभ्यताभिमानियों को अपने एक सम्यक् निर्धारित ध्वज की कल्पना करने की आवश्यकता विशेष प्रकार से प्रतीत हो रही थी। और यह अनुभव किया जा रहा था कि आर्य-ध्वज के आरोहण, अवतरण आदि की पद्धति भी सुचारु रूप से निर्धारित हो जानी चाहिए। तथा ध्वज-गीत व जयघोष आदि का निर्णय भी किया जाना आवश्यक प्रतीत हो रहा था।

आर्य-सभ्यता के महान् प्रचारक महर्षि दयानन्द की जन्म-शताब्दी के शुभ अवसर पर शताब्दी सभा ने अपने विशेष प्रस्ताव द्वारा आर्य-ध्वज का निम्नलिखित स्वरूप निर्धारित किया :—

"आर्य-ध्वज का रंग लाल (गेरुवा)[1] होना चाहिये और उस पर सूर्य के आकार के बीच में ओ३म् का 'ॐ' यह चिह्न अंकित होना चाहिए।"

1. अरुणासन्तु केतवः (वेद)
अरुण=निकलते हुए सूर्य के रंग जैसा लाल। —संपादक

इस निश्चित प्रस्ताव के अनुसार मथुरा शताब्दी में समारोह-पूर्वक आर्य-ध्वज का आरोहण किया गया। किन्तु आर्य-ध्वज के भाव तथा महत्व (Significance) आदि का स्पष्ट निदर्शन न होने तथा ध्वज के आरोहण, अवतरण आदि का प्रकार निश्चित न किए जाने के कारण ध्वज का कोई विशेष प्रचलन न हुआ। आर्यसमाजों तथा आर्य-संस्थाओं ने भी अपने-अपने विशेष पर्व व उत्सवादि पर इस ध्वज को उत्साह-पूर्वक फहराने की ओर कोई विशेष ध्यान न दिया।

अतः महर्षि स्वामी दयानन्दजी महाराज की निर्वाण-अर्द्ध शताब्दी के शुभ अवसर पर शताब्दी समिति की आज्ञा से आर्य-ध्वज समिति निम्न प्रकार से आर्य-ध्वज के स्वरूप की व्याख्या तथा उसके आरोहण व अवतरण तथा ध्वजगीत व जयघोष आदि निश्चय कर प्रकाशित करती है। संसार के प्रत्येक आर्यसमाज, आर्य-संस्था, समिति तथा संघ को चाहिये कि वह ध्वज के उच्चतम सार्वभौमिक लक्ष्य को दृष्टि में रखते हुए विशेष हर्ष और उत्साह के साथ इसका आरोहण करे।

आर्य-ध्वज का स्वरूप तथा उसकी व्याख्या

ध्वज की कल्पना में साम्प्रदायिक भेदभावों को कोई स्थान नहीं प्रदान किया जा सकता। आर्य-ध्वज किसी देश-विदेश की सीमाओं से भी असीमित तथा विश्व-बन्धुत्व विरोधक वर्तमान युग के राष्ट्रवाद (Nationalism) के बन्धन से भी मुक्त है। पूंजीवाद (Capitalism) तथा साम्राज्यवाद (Imperialism) की अनर्थकारी संस्थाओं (Institutions) से भी आर्य-ध्वज का कोई सम्बन्ध न होगा।

आर्य-ध्वज की भित्तिका (Surface) लाल रंग की होगी।

लाल रंग सदा से शक्ति तथा बलिदान का सूचक रहा है। संसार के अन्दर महान् से महान् सत्य भी बिना शक्ति और बलिदान के फैल नहीं सकता। अपनी सभ्यता तथा गौरव की रक्षा के लिए आर्य-जाति को शक्तिशालिनी बनना होगा और निरन्तर तप, त्याग और बलिदान की सुन्दर यज्ञवेदी को सजाना होगा।

आर्य-ध्वज के मध्य में अंशुमाली सूर्य का आकार स्वर्ण (सुनहरी) वर्ण में चिह्नित होना चाहिये। सूर्य अन्धकार का नाशक तथा प्रकाश का प्रतिनिधि है। सूर्य का चिह्न संसार से अज्ञान, अन्धकार मिटाने तथा वैदिक ज्ञानप्रभा प्रकटाने की ओर संकेत करता है। सूर्य का स्वर्ण (सुनहरी) वर्ण मनुष्यों को श्रेष्टतम कर्मों (Golden Deeds) के आचरण करने का सन्देश देता है।

सूर्य-मण्डल के अन्दर श्वेत वर्ण में ओंकार का "ॐ" यह चिह्न चिह्नत होना चाहिए। ओ३म् यह परमात्मा का सर्व-श्रेष्ठ तथा निज नाम है। संसार के साहित्य में ओ३म् की महिमा का अनुपम और असीम वखान है। संसार का एक एक अणु मूक भाव से उस महाप्रभु की महिमा का अहर्निश गान करता है। वसुधातल के सारे साधु, सन्त और साधक उस अद्वितीय उपास्य-देव की अलौकिक अनोखी झांकी के लिए विह्वल रहते हैं। उस सूक्ष्मातिसूक्ष्म और महान् से भी महान् सच्चिदानन्द ब्रह्म को प्राप्त करना मानव-जीवन का चरम-लक्ष्य है। यह ही संसार के सारे श्रेष्ठ कर्मों का मर्म है। ओ३म् चिन्ह का श्वेत वर्ण परमात्मदेव के निर्मल निर्विकार शुद्ध स्वरूप का सूचक है।

संक्षेप में आर्यध्वज का स्वरूप निम्न प्रकार है :—

आर्य-ध्वज का स्वरूप

(1) भित्तिका-लाल वर्ण की।

(2) सूर्य-मण्डल—मध्य में स्वर्ण सुनहरी वर्ण का।

(3) ओंकार—सूर्य-मण्डल के मध्य में श्वेत वर्ण में चिन्हित ॐ यह चिन्ह।

(4) लम्बाई-चौड़ाई—ध्वज की लम्बाई (धरती की समानान्तर बाजू) तथा चौड़ाई (ध्वज-स्तम्भ का समानान्तर बाजू) का अनुपात (निस्वत) 3:2 होगा अर्थात् यदि लम्बाई 6 फीट होगी तो चौड़ाई चार फीट होगी।

(5) ध्वज-वस्त्र—ध्वज का कपड़ा शुद्ध तथा स्वदेश निर्मित होना चाहिए।

आवश्यक नोट :—

ध्वज की भित्तिका का वर्ण सूर्य-मण्डल तथा ओंकार के वर्ण, आकार, ध्वज में उनके विहित स्थान, ध्वज की लम्बाई, चौड़ाई तथा वस्त्र उपरोक्त प्रकार के ही होने चाहिएं। यदि असावधानता के कारण कोई त्रुटि रह गई तो वह ध्वज आर्य-ध्वज न माना जा सकेगा तथा आर्य-ध्वज के मान की अवहेलना करने वाला तक समझा जावेगा।

ध्वज आरोहण की तैयारी

जिस स्थान पर ध्वज खड़ा करना हो वह चौरस विस्तृत साफ तथा सुरक्षित होना चाहिये। झण्डे का स्तम्भ खूब मजबूत तथा सुन्दर होवे। सड़ा, फटा, टूटा या बांका तिरछा बांस वा वल्ली स्तम्भ के लिये सर्वथा अनुपयुक्त है। ध्वज स्तम्भ में कभी भी लग्गी की तरह जोड़ नहीं होना चाहिये। स्तम्भ सफेद रंगा हुआ होना आवश्यक है।

स्तम्भ की लम्बाई के अनुरूप ही ध्वज की भी लम्बाई

चौड़ाई होनी चाहिये। ध्वज की चक्री तथा डोरी भी मजबूत होनी चाहिये। स्तम्भ खड़ा करने से पहले डोरी को चक्री पर चढ़ा दी जावे। डोरी सफेद सूत की होनी चाहिये, दूसरे किसी भी रंग की न हो।

स्तम्भ काफी गहरा गड्ढा खोद कर मजबूती के साथ गाड़ना चाहिये। यदि स्तम्भ अधिक ऊंचा हो तो उसे दो अलग जगहों से तीन-तीन रस्सियों से बांध कर तान देना चाहिये। स्तम्भ इतनी मजबूती से खड़ा किया जाय कि तेज से तेज हवा में भी वह झण्डे के झोकों को सह सके। स्तम्भ के चारों ओर आवश्यकता पड़ने पर पक्का चबूतरा भी बनाया जा सकता है और उसे गमलों से सजाया भी जा सकता है।

ध्वज-स्तम्भ-बिन्दु के पीछे 6 फीट के फासले पर एक रेखा खींची जावे। बाद में स्तम्भ-बिन्दु से रेखा को छेदने वाली लम्ब रेखा खींच कर उसके दो सम भाग किये जावें। जिस स्थान पर यह लम्ब रेखा बड़ी रेखा को काटेगी उस स्थान पर अध्यक्ष को खड़ा रहना होगा। स्तम्भ-विन्दु को ध्वज-क्षेत्र का मध्य-विन्दु मान कर पहले खींची हुई बड़ी रेखा को छेदने वाला एक वर्तुल (सरकिल) निकाला जावे। यह वर्तुल उस रेखा के नीचे नहीं आना चाहिये जिससे उसका आकार घोड़े की नाल के सदृश दिखाई दे। इस वर्तुल के समानान्तर चार-चार फीट के फासले से आवश्यकतानुसार वर्तुल निकाले जायं।

बड़ी रेखा के मध्य पर अर्थात् स्तम्भ-विन्दु से 6 फीट पीछे अध्यक्ष का स्थान होना चाहिये। इस स्थान के दो फीट पीछे वांई ओर शिविराधिपति तथा दाहिनी ओर सेनापति का स्थान होता है।

ध्वज-स्तम्भ की रेखा से वांई ओर शंख व विगुल बजाने वाले तथा दाहिनी ओर ध्वज-रक्षक महाशय खड़े होते हैं स्तम्भ के सम्मुख स्तम्भ को मुखातिब होकर ध्वज-गीत के उद्गाता खड़े रहते हैं। अध्यक्ष के पीछे दोनों ओर दल के भिन्न-भिन्न अधिकारी खड़े रहते हैं। उनके पीछे संन्यासी, वानप्रस्थी तथा निमंत्रित सज्जन अथवा आर्यसमाज, जिला उप-प्रतिनिधि सभा, प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा, सार्वदेशिक सभा अथवा अन्य आर्य-सभ्यताभिमानी सभा संस्थाओं के अधिकारी व अन्तरंग सदस्य यथास्थिति उपस्थित होते हैं। ध्वज के सामने खींचे हुए वर्तुल रेखाओं पर ध्वजवन्दन करने वाले आर्यवीर दल आदि स्वयंसवक संस्थाओं के सैनिक खड़े रहते हैं। तदुपरांत पहली कतार में ब्रह्मचारी अथवा ब्रह्मचारिणी-मण्डल, बालक, बालिका आदि उनके पीछे महिलाएं तथा उनके पीछे अन्य स्वयं-सेवकों की कतारें खड़ी की जाती हैं।

उपर्युक्त वर्तुल रेखाएं निकालने के बाद उनके पीछे तीनों ओर 10 फीट फासला छोड़ कर एक बड़ा आयत (Rectangle) निकालना चाहिए। इस आयात से बाहर दर्शकों का स्थान होता है। दर्शकों को इस आयत के भीतर आने नहीं देना चाहिए।

ध्वजारोपण करने के पहले उसकी तह निम्नलिखित प्रकार से करके या बांध कर उसे ऊपर चढ़ा देना चाहिए। ध्वज के चारों कोने पहले खींच कर उसकी 3 वा 4 लम्बी तह की जावें तदुपरान्त इस लम्बी पट्टी को हवा में फहरने वाले सिरे से लेकर पगड़ी के सदृश मोड़ कर छोटी तह की जावे। रस्सी का जो सिरा चक्री के ऊपर से बाहरी बाजू में आता है उसे ऊपर के सिरे को लगाया हुआ बन्द बांध देना चाहिए तथा अन्दर से आए

हुए नीचे के रस्सी के सिरे को ध्वज-वस्त्र के नीचे के सिरे का बन्द मजबूत बांध देना चाहिए। इसी नीचे के सिरे से छोटी तह बनाए हुए ध्वज को बाद में इस प्रकार गांठ बांध कर उसकी गठड़ी बनाना चाहिए कि जो जोर से खींचते ही खुल जावे तथा ध्वज हवा में फहरने लगे। इस गठड़ी को ध्वज वन्दन के पहले ऊपर चढ़ा रखनी चाहिये तथा नीचे लटकने वाली रस्सी को स्तम्भ में विशेष दक्षता के साथ बांध देना चाहिए। इस प्रकार ध्वज फहराने की तैयारी होती है।

ध्वजारोहण के अनुष्ठान के पूर्व आर्यवीर-दल आदि स्वयं-सेवक संघों के अधिकारी अपने अपने दल तैयार कर ध्वज-वन्दन क्षेत्र की बांई ओर से एक के पीछे एक सिलसिलेवार ले जावें तथा नियत स्थानों पर उन्हें खड़ा करें। ऐसा करते समय ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणी, बालक बालिकाओं का स्थान ध्यान में रखते हुए उन्हें ही पहले भीतर लाया जावे। शंख व बिगुल बजाने वाले, उद्गाता तथा भिन्न-भिन्न अधिकारी अपने-अपने नियत स्थानों पर जाकर खड़े रहें तथा आर्यसमाज वा आर्य-जाति के प्रमुख नेता निमन्त्रित सज्जन आदि को भी आदरपूर्वक उनके लिए नियत किए हुए स्थान प्रदर्शित किए जावें जिससे वह भी सब अपने-अपने स्थानों पर स्थित हो जावें।

ध्वजारोहण-विधि

ध्वजारोहण के समय समस्त आर्यवीरों, स्वयं-सेवकों तथा दर्शकों को अपने-अपने स्थान पर 'होशियार' की हालत में खड़ा रहना चाहिए। प्रत्येक आर्य-सभ्यताभिमानी के लिए यह आवश्यक है कि वह आर्य-सभ्यता के चिन्ह अपने इस आर्य-ध्वज के आरोहण के समय ध्वज को मान प्रदान करने के भाव से बिल्कुल

शांत तथा गम्भीर-चित्त होकर खड़ा रहे। परस्पर वार्तालाप करना सर्वथा अनुचित है।

टेढ़ा, तिरछा, टांगें पसार कर आलस्य युक्त होकर खड़ा रहना, टहलने लगना या बीच में ही वहां से निकल जाना अनुचित है। अन्य व्यक्ति भी जो इस अवसर पर उपस्थित हों उन्हें भी सावधान होकर खड़ा रहना चाहिए।

सब से प्रथम उद्गाता लोग 'वेद-मंत्रों' द्वारा ईश-प्रार्थना करेंगे तदुपरान्त ध्वजरक्षक अध्यक्ष महोदय से अभिवादन पूर्वक ध्वज फहराने की प्रार्थना करता है तथा ध्वज-स्तम्भ के समीप जाकर बंधी हुई डोरी खोल देता है। रस्सी को खोलने के बाद उसका भीतरी भाग अध्यक्ष के बांए हाथ में अर्पण कर देता है तथा बाहरी हिस्सा, जिससे ध्वज की गठरी बंधी हुई रहती है, दाहिने हाथ में अर्पित कर ध्वजरक्षक उसे खींचने की अध्यक्ष से प्रार्थना करता है। उसके खींचते ही गठरी की गांठ खुल जाती है तथा ध्वज हवा में फहरने लगता है। स्वयं-सेवकों तथा समस्त उपस्थित सज्जनों को इस समय अत्यन्त शांत तथा गम्भीर भाव से "होशियार" की हालत में खड़ा रहना पड़ता है। ध्वज फहरते ही शंख, बिगुल तथा बाजे बजने लगते हैं।

ध्वज फहरने लगने पर ध्वजरक्षक स्वयं-सेवकों को "कदम खोल" "आराम" यह आज्ञाएं देकर ध्वज की रस्सी स्तम्भ को पहिले ही के समान दक्षता पूर्वक बांध देता है, अध्यक्ष को अभिवादन कर फिर पीछे हटकर अपने स्थान पर जाकर खड़ा होता है। अध्यक्ष भी अपने स्थान पर जा खड़े होते हैं।

इसके बाद फिर से "होशियार" की आज्ञा दी जाती है।

और फिर—

"जयति ओ३म् ध्वज व्योम विहारी"

यह सुन्दर भावपूर्ण ध्वज गीत गाया जाता है। ध्वज गीत को गायकगण स्वर के साथ गान करें। गान समाप्त होने पर अध्यक्ष का भाषण होता है तथा आवश्यक कार्यक्रम आदि भी विशेष दशा में घोषित किया जा सकता है। अन्त में तीन वार अनुशासनपूर्वक 'वैदिक धर्म की जय' इन जयकारों के साथ ध्वजारोहण विधि समाप्त होती है। वर्तुल (सरकिल) के बाहर जाते समय भी आर्यवीरों को अनुशासन का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए। उन्हें चाहिए कि वह सब से प्रथम पहली कतार उसके बाद दूसरी, इसी प्रकार एक के पीछे एक सिलसिलेवार अपनी दाहिना ओर से बाहर निकल जावें। तथा बिना किसी भी प्रकार की अशान्ति के अपने-अपने दल के अधिनायकों की आज्ञा के अनुसार कार्य करने में प्रवृत्त हों।

ध्वजावतरण विधि

इस विधि के करते समय भी सब आर्यवीरादि ध्वजा-रोहण विधि के समान ही ध्वज के सामने वर्तुलाकार अनुशासन-पूर्वक खड़े होकर ध्वजरक्षक के आदेशानुसार पूर्ववत्—

"जयति ओ३म् ध्वज व्योम विहारी"

इस ध्वजगीत का गान करें। तदुपरान्त स्तम्भ से रस्सी खोलकर ध्वज को उतारना आरम्भ किया जाता और उसे उतारते क्षण शंख, बिगुल तथा बाजे बजाये जाते हैं। ध्वज को उतार लेने के उपरान्त पूर्ववत् उसकी तह कर उपस्थित उच्चाधिकारी को सुरक्षित रखने के लिए अर्पण कर देना चाहिए। ध्वज-रक्षक के कथन तथा अनुशासन के अनुसार अन्त में तीन वार विधिपूर्वक 'वैदिक-धर्म की जय' का घोष करना चाहिये। और पूर्व कथित विधि से समस्त आर्यवीरादि सिलसिलेवार ध्वजक्षेत्र से बाहर निकल आवें।

ध्वजारोहण विधि प्रातःकाल यज्ञ की समाप्ति पर अथवा उससे पूर्व की जानी चाहिए। तथा ध्वजा-वतरण की विधि साधारणतया सूर्यास्त से पूर्व की जानी चाहिये। ध्वज की रक्षा का उचित प्रबन्ध न होने की दशा में एक घण्टा पर्यन्त ध्वज-क्षेत्र में ध्वज फहराने के उपरान्त उपर्युक्त विधि से उतार लिया जाना चाहिए।

जय-घोष

आर्य-जाति के अन्दर जय-घोष की पद्धति भी कोई अनोखी वा अर्वाचीन नहीं है। अज्ञातकाल से इसका प्रचार है। आर्य-सभ्यता के महान् प्रचारक ब्रह्मा, व्यास, वशिष्ठ, बुद्ध, शंकर, दयानन्द आदि का जय-घोष करना, आर्य-जाति के महान् नेता राम, कृष्ण शिवाजी, प्रताप, गुरु गोविन्द, तिलक तथा गांधी आदि की जय के नारे लगाना कोई अनुचित बात नहीं अपितु समय-समय पर इसकी आवश्यकता तथा विशेष प्रयोजन भी होता है। इन महा-पुरुषों की जयन्तियां तथा इनसे सम्बन्धित उत्सव व पर्वों पर इनके जयकारे लगाना सर्वथा युक्ति-युक्त तथा आवश्यक हैं। किन्तु चाहे जिस अवसर पर चाहे जिसका जयकारा लगाने लगना यह कोई नियम वा अनुशासन की बात नहीं है।

यह भलीभांति ध्यान में रखना चाहिये कि जब-जब आर्य-ध्वज के आरोहण तथा अवतरण का प्रसंग हो तब किसी व्यक्ति का, चाहे वह कितना भी महान् तथा वन्दनीय क्यों न हो, जयकारा नहीं लगाना चाहिए।

इस अवसर पर तो 'वैदिक-धर्म की जय' केवल यह ही घोष करना उचित ठहराया गया है। वैदिक-धर्म की जय में संसार के सभी ऋषि, मुनि, साधु-सन्त, महात्मा तथा महापुरुषों की जय सम्मिलित है, क्योंकि इनका जीवनोद्देश्य जगतितल पर विशुद्ध आर्य वैदिक-संस्कृति का प्रचार करना तथा आर्य आदर्श और गौरव की रक्षा करना ही रहा है। व्यक्तियों से आर्य-धर्म कहीं

अधिक महान्, पूज्य तथा आदरणीय है। अत: एक बार नहीं, तीन वार "वैदिक-धर्म की जय" का सुहावना घोष किया जाना चाहिए।

"वैदिक-धर्म की जय" केवल यह ही एक पुनीत जय-घोष संसार के समस्त आर्य-सभ्यताभिमानी देशों तथा जातियों में गूंजना चाहिये। संसार के समस्त आर्य, हिन्दू, बौद्धादि बन्धुओं को तथा आर्य-सभ्यता से प्रेम रखने वाले अन्य ईसाई, मुसलमान, यहूदी आदि सज्जनों को वैदिक धर्म की उदार पताका के नीचे विश्व-बन्धुत्व के नाते श्रद्धा और प्रेम के साथ एकत्रित होकर वैदिक-धर्म का जय-घोष करना चाहिए।

नोट :—दयानन्द निर्वाण अर्द्ध-शताब्दी समिति महर्षि दयानन्दजी महाराज की स्मृति में मनाए जाने वाले इस निर्वाण-अर्द्धशताब्दी के[1] अवसर पर आर्य-ध्वजारोहण के समय तीन बार विधि पूर्वक 'वैदिक धर्म की जय' का घोष करने के उपरान्त एक बार 'महर्षि दयानन्द की जय' का घोष करना भी निश्चय करती है। यह विकल्प केवल शताब्दी के अवसर के लिए ही है।

जय-घोष सिखाने की पद्धति

"वैदिक-धर्म की जय" इस जय-घोष में से ध्वजरक्षक ज्यों ही ऊंचे स्वर में "वैदिक-धर्म की जय" इन शब्दों का उच्चारण करे त्यों ही समस्त आर्य वीरों, सेवकों व उपस्थित जनता द्वारा "जय" की गगनभेदी ध्वनि की जानी चाहिए। जय-घोष के समय आवाज गूंजती हुई हो इसका पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए। रोते हुए स्वर में जयघोष कदापि नहीं करना चाहिए। जयघोष का अर्थ है वैदिक-धर्म के प्रति अपने हृदय के प्रेम तथा हर्ष को प्रकट करना। अतएव जयघोष की ध्वनि उच्च तथा पराक्रमयुक्त गूंजती हुई गगनभेदी स्वर में होनी अत्यावश्यक है।

---

1. तथा ऐसे ही अन्य अवसरों पर। —संपादक

आवश्यक निवेदन

1—ध्वजारोहण की विधि का अनुष्ठान किसी भी आर्य-सभ्यताभिमानी समाज, सभा, संघ, समिति संस्था व सेवक-दल आदि द्वारा निश्चित दिवस पर किया जा सकता है। विशेष-विशेष पर्व तथा त्यौहारों पर उत्सव, सम्मेलन तथा मेलों के अवसर पर निश्चित स्थान तथा समय पर ध्वजारोहण करने की प्रथा का प्रचार करना उचित तथा उपादेय है।

2—ध्वज के आरोहण तथा अवतरण की दोनों विधियां बहुत गौरव समन्वित हैं अतएव इनका अनुष्ठान विशेष अनुशासन के साथ शान्तिपूर्वक किया जाना चाहिये। आर्य मन्दिरों तथा संस्था भवनों पर आर्यध्वज का निरन्तर फहरना अत्यन्त आवश्यक है। वर्ष के अन्दर (पुराना हो जाने पर) 2 वा 3 बार निश्चित पर्वों पर इन ध्वजों को बदल भी देना चाहिए।

3—व्यक्तियों को भी अपने-अपने भवन पर ध्वजारोहण करने का अधिकार है। इसके लिए दिन, समयादि तथा विधि आदि का कोई बन्धन नहीं है। ध्वज के प्रति उचित मात्रा में मान प्रदर्शन किया जाना ही पर्याप्त है।

4—ध्वज वस्त्र पर वेल बूंटे निकालना, गोट लगाना आदि सब वर्जित है। ध्वज को माला आदि चढ़ाना सर्वथा अनुचित तथा अनार्य कर्म है। किसी भी आर्य को भूल कर भी ऐसा

अनार्य दुष्ट कर्म करने में प्रवृत्त नहीं होना चाहिए। अपने क्रियात्मक जीवन में आर्य धर्म का पालन करना, आर्य-सभ्यता का प्रचार करना तथा आर्य गौरव की रक्षा में अपना सर्वस्व समर्पण करने तक के लिए उद्यत रहना ही आर्य-ध्वज का सर्वश्रेष्ठ सम्मान माना गया है।

5—ध्वज को इधर-उधर नहीं पड़ा रहने देना चाहिए। उसको सुरक्षित स्थान पर रखना आवश्यक है। उसको पैर तले रूंदना, उससे झाड़न का काम लेना उसकी एक प्रकार से अवहेलना करना है। अतएव जब ध्वज चढ़ा हुआ न हो तो उसको तह करके सुरक्षित रखना चाहिए।

6—फटा पुराना या जिसका रंग उड़ गया हो, ऐसा ध्वज स्तम्भ पर कभी न चढ़ाया जावे। पुराने यज्ञोपवीत के समान उसका भी विसर्जन कर देना चाहिए।

—इति—

ॐ

आर्य-ध्वज-गीत

जयति ओम् ध्वज व्योम विहारी।
विश्व-प्रेम प्रतिमा अति प्यारी ।। जयति० ।।

सत्य-सुधा बरसाने वाला, स्नेह-लता सरसाने वाला।
साम्य सुमन विकसाने वाला, विश्व-विमोहक भवभय हारी ।।
।। जयति० ।।

इसके नीचे बढ़ें अभय मन, सत्पथ पर सब धर्म धुरी जन।
वैदिक रवि का हो शुभ उदयन, आलोकित होवें दिशि सारी ।।
।। जयति० ।।

इससे सारे क्लेश शमन हों, दुर्मति दानव द्वेष दमन हों।
अति उज्ज्वल अति पावन मन हों, प्रेम तरंग बहै सुखकारी ।।
।। जयति० ।।

इसी ध्वजा के नीचे आकर, ऊंच नीच का भेद भुला कर।
मिले विश्व मुद मंगल गाकर, पन्थाई पाखंड बिसारी ।।
।। जयति० ।।

इस ध्वज को लेकर हम कर में, भर दें वेद ज्ञान घर-घर में।
सुभग शान्ति फैले जगभर में, मिटै अविद्या की अंधियारी ।।
।। जयति० ।।

विश्व-प्रेम का पाठ पढ़ावें, सत्य अहिंसा को अपनावें।
जग में जीवन ज्योति जगावें, त्याग-पूर्ण हो वृत्ति हमारी ।।
।। जयति० ।।

आर्य-जाति का सुयश अछय हो, आर्य-ध्वजा की अविचल जय हो।
आर्य-जनों का ध्रुव निश्चय हो, आर्य बनावें वसुधा सारी ।।
।। जयति० ।।

———

आर्य ध्वज गीत का संशोधन स्वरूप

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की 28-8-55 की अन्तरंग के निश्चयानुसार आर्य ध्वज गीत निम्न प्रकार संशोधित होकर प्रचारित किया गया है। भविष्य में उक्त गीत का संशोधित रूप में ही प्रयोग होना चाहिए।

—सम्पादक

जयति ओ३म् ध्वज व्योम बिहारी।
विश्व प्रेम सरिता अति प्यारी॥ ध्रुव॥
सत्य सुधा बरसाने वाला, स्नेह लता सरसाने वाला।
सौख्य सुमन विकसाने वाला, विश्व विमोहक रिपु भयहारी॥
इसके नीचे बढ़ें अमय-मन सत्पथ पर सब धर्म धुरी जन।
वैदिक रवि का हो शुभ उदयन आलोकित होवें दिशि सारी॥
इसी ध्वजा के नीचे आकर नीच ऊंच का भेद भुला कर।
मिले विश्व मुद मंगल गाकर घोर अविद्या तम संहारी॥
इस ध्वज को लेकर हम कर में भर दें वेदज्ञान जग भर में।
सुभग शान्ति फैले घर घर में मिटे अविद्या की अंधियारी।
आर्यजाति का यश अक्षय हो आर्यध्वजा की अविचल जय हो।
आर्यजनों का ध्रुव निश्चय हो, आर्य बनावें वसुधा सारी॥